# हिन्दुस्तान में दावत-क़ुरआन की ओर

लेखक- मौलाना इनायत उल्लाह सुबहानी

अनुवादक- डा. रफीक अहमद

हमारा हिन्दुस्तान जिसके ज़र्रे-ज़र्रे से हमें प्रेम है, जिसके कोने-कोने को हमने खूने दिल से सीचा है जिसके बारे में महान शायर ने कहा है और बिलकुल सही कहा है-

हम बुलबुले हैं उसकी, वह गुलसितां हमारा

आज हमारा यह अत्यन्त प्रिय देश बर्बादी के कगार पर खड़ा है, हमारा यह देश ही नहीं अपितु पूरा विश्व तबाही के कगार पर खड़ा है।

यह अकेला हमारा इहसास नहीं, आज देश का बुद्धिजीवी वर्ग देश के बारे में और विश्व के बुद्धिजीवी वर्ग विश्व के बारे में लगातार इस प्रकार के वक्तव्य दे रहे हैं जो अत्यन्त चिन्ताजनक है।

कुछ वक्तव्यों को देखें-

देश में शायद ही कोई ऐसा विभाग हो जहां भृष्टाचार ने अपने पांव न जमा लिये हों। राजनीति तो उसमें बुरी तरह से लपेटे में है (अमानन्द्र अस्नकाल नई दिल्ली राष्ट्रीय सहारा 18 जुलाई 2007)। हम एक जाति की हैसीयत से ओर एक राष्ट्र की हैसीयत से बिलकुल गलत दिशा जा रहे हैं। यह स्थिति तुरन्त तवज्जो चाहती है।

''हमारे देश में भृष्टाचार, गरीबी, जंगलों की सुरक्षा और पर्यावरण को प्रदूषण से बचाने के लिये क़ानून मौजूद हैं, मगर इनमें से कितने क़ानून है जो मुल्क की समस्याओं को हल कर सके है''? (दर्जित गुप्ता बंगलौर, इन्डियन



एक्सप्रेस 15 दिसम्बर 2007) इस वक्त हमारी गुफ्तगू पूरी दुनिया के परिपेक्ष्य में नहीं, बल्कि अपने देश के परिपेक्ष्य में है। इसलिए हम उन्हीं कथनों पर बस करते हैं, जो सीधे तौर पर हमारे देश से सम्बन्धित हैं।

एक तरफ़ तो मुल्क के हालात हैं, जिन पर राय देने वाले अलग-अलग ढंग से राय देते हैं। भिन्न-भिन्न राजनैतिक दल तथा भिन्न-भिन्न नेता एक दूसरे पर आरोप लगाते, और एक दूसरे की बिगाड़ का ज़िम्मेदार ठहराते हैं।

एक वर्ग उन लोगों का भी है, जो सीधे तौर पर यहां की राजनीति में शामिल नहीं है, मगर वह इन परिस्थितियों से पूरी तरह परेशान हैं जो मुल्क को बहुत तेज़ी से तबाही की ओर ढकेल रहे हैं। वह हैरान है कि आखिर बिगाड़ का सैलाब किधर से आ रहा है और इस सैलाब पर बांध बांधना कैसे सम्भव है ? दूसरी ओर अल्लाह की किताब है जो बराबर आवाज़ दे रही है :

अरबी...............

(कहो, ऐ मेरे बन्दो, जिन्होंने अपने ऊपर ज़्यादती की है, अल्लाह की रहमत और दया से मायूस न हो, निसन्देह अल्लाह तमाम गुनाहों को माफ कर देगा। निसन्देह वह बहुत ही क्षमा करने वाला और दयावान है)

अरबी...............

''ऐ लोगों ! तुम्हारे पास तुम्हारे रब के यहां से स्पष्ट क़ानून आ गया, और तुम्हारी तरफ़ हमने हर गुमरही को छांट देने वाला नूर उतारा है''

मानों इन्सानी समाज से जो भी ज़ुल्म व ज़्यादती और बुराई होती है, वह वास्तव में नतीजा होती है, अल्लाह की नाफ़रमानी का। दूसरा अल्लाह का भेजा हुआ क़ानून और उसका भेजा हुआ निज़ाम (व्यवस्था) ही एक अच्छी और शान्तिमय जीवन का द्योतक है। इस व्यवस्था से बग़ावत करके इन्सान कभी भी सुख नहीं पा सकता।

हमारे दयावान पालनहार की दिल को छूने वाली आवाज कोने-कोने में गूंज रही है। वहीं दूसरी ओर मुल्क का ज़र्रा-ज़र्रा आज अल्लाह की नाफ़रमानी और उसके आदेशों की अवहेलना की भयानक परिणाम से पनाह मांग रहा है। मगर पालनहार की इस पुकार या मुल्क की दर्दनाक फ़रियाद को सुनने वाले कान कहां से आयें?

ठीक तौर पर मुस्लिम समुदाय से यह उम्मीद की जा सकती थी, कि वह अपने पालनहार की इस पुकार पर कान धरेगी। मगर अफ़सोस का मुक़ाम है कि मुस्लिम समुदाय के लिए भी इस पुकार में कोई कशिश और आकर्षण नहीं रहा। कोई समझे या न समझे, मगर यह एक हक़ीक़त है कि अल्लाह की किताब और अल्लाह की भेजी हुई हिदायत



और मार्गदर्शन के अलावा कोई दूसरी चीज़ हमारे मुल्की या क़ौमी समस्याओं को हल नहीं कर सकती। इस हक़ीक़त की अत्यन्त स्पष्ट दलील हमारे अतीत और वर्तमान के तज़्रबे हैं। इस मुल्क में बसने वाले इन्सानों ने इस मुल्क की तरक्की और विकास के लिए जितने तरीक़े, जितने रास्ते, और जितने ''इज़्म'' हो सकते थे उन सबका तज्रबा करके देख लिया है। परन्तु उन्होंने अनुभव नहीं किया है तो केवल अल्लाह की किताब और अल्लाह की उतारी हुई शरीअत और विधान का।

मानव इतिहास की यह कितनी अजीब और कितनी भयानक हक़ीक़त है कि इन्सान अपने ही जैसे अनपढ़ और नासमझ इन्सानों के द्वारा निर्मित सिद्धान्तों और दर्शन को तो बड़ी आसानी से स्वीकार कर लेता है। वह उनका तज्रबा करता है और नाकाम हो जाता है, फिर तज्रबा करता है, फिर नाकाम होता है, बार-बार तज्रबा करता है और बार-बार नाकाम होता है, मगर अपने सृष्टा के बनाये हुये सिद्धान्तों और नियमों का तज्रबा करने से दूर भागता है और उन्हें अपनाने के लिए अपने अन्दर कोई उमंग नहीं पाता। बल्कि अकसर ऐसा होता है कि वह उनसे लड़ाई पर आमादा होता है।

ज़रूरत है कि पहले हम खुद समझें, फिर अत्यन्त

विश्वास और यक़ीन के साथ अपने देशवासियों को बतायें कि हमारे देश में जितना कुछ संकट और जितना कुछ खलफिशार और बिखराव है, और सारे मुल्क में जो वर्गीय संघर्ष चल रहा है, इन सब का हल सिर्फ़ और सिर्फ़ क़ुरआन यानी अल्लाह का भेजा हुआ क़ानून है, अगर वह सही अर्थो में अपनी मातृभूमि से प्रेम करते हों, तो उनका फर्ज़ है कि वह इस गुणकारी नुस्खा को भी आज़मायें।

हम उन्हें जिस तरह भी हो सके यह समझायें कि इन्सानों का सामूहिक जीवन हो या व्यक्तिगत, वह कभी सफल और सुखमय नहीं हो सकता, जब तक अल्लाह तआला के दिये हुये नियमों का पाबन्द न हो। इन्सान का ज्ञान बहुत थोड़ा और सीमित है। अरबी......

वह खुद अपने व्यक्तिगत जीवन के लिए कल्याणकारी सिद्धान्त के निर्माण से मजबूर हैं। फिर वह सम्पूर्ण मानव समाज के लिये सही और उचित नियमों को किस प्रकार सृजन कर सकेगा ?

हम मुसलमानों पर फर्ज़ है कि अपने देशवासियों तक अल्लाह का दीन पहुँचायें, हम मुल्क के एक-एक बन्दे के घर की कुन्डी खटखटायें और उसके दिल के दरवाज़े पर दस्तक दें, अगर मादरे वतन का एक व्यक्ति भी अल्लाह की हिदायत और अल्लाह की किताब से अपरचित रह जाता है,



तो यह अपने महत्वपूर्ण कर्तव्यों के निर्वहन में हमारी विफलता का एलान और हमारी खुदापरस्ती (ईशभक्ति) और क़ुरआन-दोस्ती के लिये एक खुली हुयी चुनौती है। इस लिहाज़ से देखिये तो हमारा जुर्म कितना संगीन, और हमारी कोताही कितनी अफसोसनाक है। आज मुल्क की कितनी प्रतिशत आबादी है जिस तक हमने अल्लाह का कलाम (क़ुरआन) उसका संदेश पहुँचाया है।

इन देशवासियों जिन तक अल्लाह का पैग़ाम और अल्लाह का कलाम पहुँचाना हमारा फर्ज़ है। अगर उन तक हम रब का पैग़ाम पहुँचाते हैं, और वह उसी अज्ञानता और नावाकफियत के साथ इस दुनिया से रुखसत हो जाते हैं, तो क्या उनकी बेदीनी और खुदा से दूरी के ज़िम्मेदार हम नहीं ठहराये जायेंगे। और अगर इस सिलसिले में हमसे पूंछगच्छ होगी और निश्चित पूंछगच्छ होगी, तो अपनी सफाई या बचाव के लिये हम क्या जवाब देंगे ?

देश बन्धुओं के सिलसिले में हम से कोताही हो रही है, खुद मुसलमानों की एक बड़ी तादाद आज क़ुरआन से दूर हैं। आज हिन्दुस्तान का मुसलमान भी क़ुरआन को किताबे हिदायत और ज़िन्दगी का क़ानून मानने के लिये तैयार नहीं। वह क़ुरआन को केवल बर्कत और सवाब की किताब समझता है और उसके अक्षरों और शब्दों के

उच्चारण को काफी समझता है।

अक्षरों और शब्दों की तिलावत करने वालों की तादाद भी बहुत ज़्यादा नहीं, मुसलमानों में एक भारी तादाद ऐसी है जो घर की किसी ऊँची अलमारी में खूबसूरत रेशमी गिलाफ़ों के अन्दर क़ुरआन पाक रखने को काफी समझती है। क़ुरआन पाक की एक आयत है..................

(और रसूल कहेगा ऐ मेरे रब ! मेरी क़ौम ने इस क़ुरआन को छोड़ दिया था)

यह आयत याद आती है तो कलेजा कांपने लगता है, ऐसा लगता है जैसे यह आयत हमारी ही क़ुरआन से दूरी या क़ुरआनी शिक्षाओं से बेपरवाई का दर्दनाक मंजर पेश कर रही है और हमारे सामने हमारे ख़िलाफ़ दलील बनकर खड़ी हो।

सामूहिक रूप से आज मिल्लते इस्लामियां क़ुरआन पाक को छोड़ चुकी है। बेशक आज हिफ़्ज व किरत के राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय कम्पटीशन हो रहे हैं। जगह-जगह मदरसे और क़ुरआन-सेन्टर्स खोले जा रहे हैं, हज़ारों और लाखों की तादाद में क़ुरआन और उसके अनुवाद क़ुरआन के अत्यन्त खूबसूरत नुस्खे छप रहे हैं और समूहों और समुदायों में वितरित हो रहे हैं, लेकिन अस्ल बुनियादी काम जिसके लिये क़ुरआन पाक नाज़िल हुआ था, वह काम नहीं हो रहा है।



ये क़ुरआन आया था ताकि हमारी ज़िन्दगियों को रोशन करे, वह हमें जीवन के मूल्यों से अवगत कराये। वह हमें जीवन का सर्वोच्च एवं पावन उद्देश्य प्रदान करे, वह हमें अल्लाह के लिये जीना और अल्लाह के लिये मरना सिखाये।

मगर आह ! हमने क़ुरआन पाक की इस हैसीयत को नहीं समझा, अपनी ज़िन्दगी के महत्वपूर्ण कार्यक्रमों से उसे दूर रखा। अपनी व्यक्तिगत या सामाजिक जीवन के महत्वपूर्ण फ़ैसलों में उसे शामिल नहीं किया। हमने उसे अपने जीवन की राजगद्दी पर बिठाने के बजाये उसे जीवन की गैलरी में डाल दिया। और ऐसा करके हमने क़ुरआन को नहीं खुद अपने आपको नुक़सान पहुँचाया।

मुसलमानों ! हालात बहुत ही दर्दनाक हैं, आज अगर मुल्क के अन्दर मुसलमान बेवजन हैं तो उसका इल्ज़ाम हुकूमतों को मत दो। देशवासियों को मत दो। क्योंकि यह खुद अपनी बोई हुई फ़सल है जो हम काट रहे हैं।

अल्लाह की किताब से बेपरवाई, और उसकी तरफ़ से पड़ने वाली ज़िम्मेदारियों से ग़फ़लत ही हमारी सारी परेशानियों की जड़ और हमारी तमाम बर्बादियों की बुनियाद है। अगर हम अपने मेहरबान पालनहार के यहां

इज़्ज़त न पा सके तो कौन है जो हमें ज़िल्लत और अपमान के गहरे समन्दर से निकाल सके।

हो सकता है इस मौक़े पर आप मुल्क के भृष्टाचार और परिस्थितियों की प्रतिकूलता की शिकायत करें, मुल्क की अतिवादी संगठनों और उनकी खुली हुयी ज़्यादतियों, बुराइयों और इस्लाम-विरोधी और मुस्लिम-विरोधी गतिविधियों का हवाला दें। क़ुरआन से उन्हें जो दुश्मनी है। मुल्क के उच्च न्यायालय तथा सर्वोच्च न्यायालय के द्वारा इस पर प्रतिबंध लगवाने की जो असफल कोशिशें अतीत में हुई हैं और आये दिन होती रहती हैं उनकी चर्चा करें।

लेकिन प्रश्न यह है कि सारी बातें क्या हमारे लिये फर्ज़ में कोताही की दलील बन सकती है ? क्या यह सारी बातें दावत की अनिवार्यता और तबलीग़ की फ़रज़ीयत से हमें मुक्त कर सकती है? नही हरगिज़ नहीं।

नवाये हक़ को अगर यह दुनिया क़रार देती है बाग़ियाना
मैं तोहमते बुज़दिली न लूंगा मुझे गवारा है सर कटाना

नबी सल्ल० और आपके जांनिसार साथियों ने मक्का में जब क़ुरआन पाक का पैग़ाम सुनाया था, और जब अरब के मुश्रिकों को क़ुरआन पाक पर ईमान लाने की दावत दी थी, तो क्या उस वक्त के हालात उनके लिये अनुकूल थे ? क्या उन्हें गालियों, धमकियों, और हर तरह की तकलीफ़ों का सामना नहीं करना पड़ा था ? यक़ीनन करना पड़ा था



और हमसे ज़्यादा करना पड़ा था। लेकिन देखने की चीज़ यह है कि उनके पांव तनिक भी डगमगाये नहीं।

वह सारे ज़ुल्म सहते रहे, और आंधियों में चिराग़ जलाते रहे। आंधियां थक गयी, मगर वह लोग नहीं थके। आखिरकार आंधियों का ज़ोर टूट गया और वह चिराग़ सूरज बन गया और उसकी आस्मानी किरणें सारे आलम में फैल गयीं। यह विपरीत परिस्थितियां जिनसे हम घबराते हैं, उन्हीं प्रतिकूल अवस्थाओं में दावतें पलती और फैलती हैं। उन्हीं विपरीत अवस्थाओं में कौमे संभलती और ज़िन्दगी की कठिनाइयों पर विजय पाती हैं। इन्हीं मुखालिफ हालात में दावती काम करने वालों की योग्यतायें निखरती और उनकी छुपी हुई क्षमतायें सामने आती हैं। परिस्थितियां प्रतिकूल होने का मतलब यह हरगिज नहीं होता कि हम अपनी ढाल टेक दें और अपनी ज़िम्मेदारियों से मुक्त हो जायें।

हालात के प्रतिकूल होने का अर्थ सिर्फ़ और सिर्फ़ यह होता है कि हम पहले से ज़्यादा होशियार हो जायें। जहां तक मुम्किन हो, हिकमत और समझदारी से काम लें और ऐसी पालीसी अपनायें और ऐस प्रोग्रामों को लेकर चलें कि उन हालात के फ़ितनों से सुरक्षित रहते हुये अपने काम को जारी रख सकें।

फिर सोचने का एक पहलू और भी है, हमारे इस

मुल्क में अगर इस वक्त आराजक तत्वों का दबदबा है तो अच्छे लोगों की भी कमी नहीं। अगर यहां एक बड़ी तादाद ऐसे लोगों की है जो रात व दिन इस्लाम और इस्लाम के अनुयाइयों के खिलाफ़ ज़हर उगलते हैं, तो एक बड़ी तादाद ऐसे लोगों की भी है जो इन ज़हर फैलाने को नापसन्द करते और खुलकर उनकी मुख़ालफ़त करते हैं।

अगर मुसलमानों पर जुल्म होता है, चाहे इस मुल्क में या इस मुल्क के बाहर, तो उसके ख़िलाफ़ वह विरोध प्रकट करते हैं और कभी कभार उनके बयानात खुद मुस्लिम विद्वानों से ज़्यादा हिम्मत और हौसला देने वाले होते हैं। कुछ नमूने देखें :

''वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों में एक ऐसे लीडर की सख्त ज़रूरत महसूस होती है जो डब्लू जार्जबुश के सामने खड़ा हो सके और अमरीकी निरंकुशता को चुनौती दे सके। हालात के विशलेषण खासतौर से डब्लू जार्जबुश की नीतियों का जाइज़ा साफ बता रहा है कि आज नहीं तो कल यह हो कर रहेगा'' (दिनेश मिश्रा दक्षिण 24 परगना स्टेट्स्मेन 21 अक्टूबर 2007)

''आज हर समझदार व्यक्ति अमरीका की विदेश नीति और खासकर ईराक नीति को बुरी नज़रों से देखता है। यह सोचना कि मुट्ठी भर लोग मात्र अपनी आर्थिक



स्वार्थ को सामने रख कर झूठ की बुनियाद पर किसी मुल्क के खिलाफ़ फौजी कार्यवाही कर बैठें और दुनिया तमाशाई बनी रही, तो ऐसा सम्भव नहीं है। डा० मुहम्मद हनीफ़ के मामले ने तो यह बिलकुल बेनक़ाब कर दिया कि पश्चिम की एक सोची समझी योजना है, इस एजेन्डे में सलमान रुश्दी जैसे लोगों की ही गुंजाइश है। अगर आप भी उसी घटिया ज़ेहनीयत के हैं तब तो ठीक है, वरना आतंकवाद, आतंकवादी इस वर्ड–आर्डर की पैदावार है जो कुछ बड़ी शक्तियां स्थापित करना चाहती हैं। वर्ड आर्डर में कमज़ोर जातियों और कमज़ोर देशों के लिये कोई जगह नहीं है। (संजय घोष नई दिल्ली द हिन्दू 24 जुलाई 2007)

''क्या यह एक भद्दाा मज़ाक़ नहीं है जिस देश की न्याय पालिका इतनी ज़्यादा सक्रिय हो, वहा लोग बरसों किसी क़ानूनी चाराजुई के बग़ैर जेलों में पड़े सड़ते रहें। अक्सर घटनायें ऐसी हैं कि आरोपियों का अपराध साबित नहीं हो सका। क्या कभी आरोप लगाने वालों को भी दण्डित किया गया? अगर नहीं तो ऐसा क्यों हुआ? (मेजर जनरल वी.के. सिंह गुड़गॉव हिन्दुस्तान टाइम्स 1 जून 2007)

''तस्लीमा नसरीन को कट्टरपन्थी मुसलमानों से चाहे कितनी ही शिकायतें हो, उन्हें एक विशेष धर्म के अनुयाइयों की भावनाओं को ठेस पहुँचाने की अनुमति कभी किसी

कीमत पर नहीं दी जा सकती। वह इस देश के नागरिक भी नहीं हैं, इसलिये वह न तो किसी विशेष धर्म के मानने वालों की भावनाओं को ठेंस पहुँचाने का हक़ रखती हैं और न ही देश के धर्मनिर्पेक्ष चरित्र को मिटाने का'' (अरुन गुप्ता कलकत्ता स्टेटसमेन 9 जनवरी 2008)

''इसमें अब कोई सन्देह नहीं रह गया कि विरोधी पार्टी के नेता श्री लालकृष्ण अडवानी आमिर खान से ज़्यादा अच्छे एक्टर हैं। ख़बर है कि वह आमिर खान की फिल्म ''तारे ज़मीन पर'' देखते हुये रो पड़े थे। (13 जनवरी) उनकी पार्टी उन्हें लौह पुरूष कहती है। लेकिन श्री अडवानी ने यह प्रतिक्रिया देने की कोशिश की है कि उनके विरोधी चाहे उन्हें कट्टरवादी नेता कहें, मगर उनके सीने में एक ऐसा धड़कता दिल है जो मर्म और दया से परिपूर्ण है। इस अवसर पर भाजपा प्रत्याशी से पूछा जा सकता है कि जब गुजरात में नरेन्द्र मोदी हुकूमत के इशारे पर मासूम बच्चों का कत्ल किया जा रहा था, उनके माँ-बाप का कत्ल किया जा रहा था और पूरा गुजरात जल रहा था, तब ऑखें क्यों सूखी पड़ी थी कि उनसे एक बूंद आंसू न टपका। हां याद आया कि नरेन्द्र मोदी ने भी वर्तमान में कुछ आंसू बहाये हैं। तो भला आक़ा क्यों पीछे रहता।'' (मुकेश कौशिक गाज़ियाबाद ऐशियन ऐज 14 जनवरी 2008)



''भारत की हुकूमत को अपने नागरिकों की सुरक्षा करनी चाहिये, जो लोग इससे अलग सोच रखते हैं उन्हें जान लेना चाहिये कि आज जो कुछ एक मुसलमान के साथ हुआ है, कल उन्हीं हालात से किसी हिन्दू, सिख, या ईसाई को भी सामना करना पड़ सकता है। (बी. रामास्वामी, न्यू जरसी अमरीका द हिन्द 19 जुलाई 2007)

अनापोलिस मीटिंग इस मज़ाक की कड़ी है जो पिछले सौ वर्षो से जारी है, क्योंकि इसराईल आबादी को हटाकर उनकी ज़मीन पर नाजाइज़ कब्ज़े से बाज़ नहीं आयेगा, नस्लकुशी और नरसंहार का सिलसिला जारी रहेगा। और इस तरह सद्भाव और शान्ति के अमल को ध्वस्त कर देगा। इसराइल, यू.एन.ओ. और आलमी बिरादरी के इस मांग को सुनी अनसुनी करता चला आ रहा है, फ़िलिस्तीन मसले का क़ाबिले क़ुबूल बावक़ार हल निकलना चाहिये। (दीपक जोशी, मुम्बई, हिन्दुस्तान टाइम्ज़ 30 नवम्बर 2007)

यह कुछ नमूने हैं, वरना इस प्रकार के कथन मोटे अक्षरों में प्रकाशित होते रहते हैं। ये कथन इस हक़ीक़त तक पहुँचने के लिये बिलकुल काफ़ी है कि हमारा मुल्क हिन्दुस्तान इस बिगड़े हुये हालात में भी अच्छे लोगों से खाली नहीं है, और काम करने वालों के लिये काम के बहुत मौक़े हैं।

जहां तक क़ुरआन पाक का सम्बंध है, तो क़ुरआन पाक के लिये तो हिन्दू जाति में बड़ी प्यास पायी जाती है, इतनी प्यास पायी जाती है, जिसका हम दूर से अन्दाज़ा कर सकते हैं।

27 नवम्बर से 7 दिसम्बर 2007 में लखनऊ में एक पुस्तक मेला लगा। इस मेले में मधुर संदेश संगम ने भी अपना बुक स्टाल लगाया जिस पर दूसरी बहुत सी पुस्तकों के साथ-साथ हिन्दी अनूदित क़ुरआन, अंग्रेज़ी अनूदित क़ुरआन का बहुत बड़ा स्टाक था।

रिपोर्ट के अनुसार हज़ारों हिन्दू भाई इस बुक स्टाल पर आये और हज़ारों की संख्या में हिन्दी अनूदित क़ुरआन खरीद कर ले गये। क़ुरआन पाक के अध्ययन के बाद उन्होंने अपने जो विचार और संवेदनायें व्यक्त किये वह अत्यन्त आश्चर्य युक्त, अत्यन्त उत्साहवर्धक और इस महान ग्रन्थ के बिलकुल शान के मुताबिक थे। नमूने के तौर पर केवल दो विचार मुलाहज़ा हों।

''आज मेरे मन की मुराद पूरी हो गयी, मैं बहुत दिनों से क़ुरआन का हिन्दी अनुवाद और हज़रत मुहम्मद सल्ल० की जीवनी पढ़ना चाहती थी, मगर तलाश के बावजूद मिल नहीं पा रही थी, मधुर संदेश के स्टाल से यह सब चीज़े पाकर मैं मालामाल हो गयी। इस अनमोल उपहार



को मैं जीवन भर अपने पास रखूंगी और उससे मार्गदर्शन प्राप्त करती रहूंगी, धन्यवाद'' (शान्ति वर्मा लखनऊ) ''जब मैंने क़ुरआन का अध्ययन शुरू किया तो मेरे आश्चर्य की कोई सीमा न रही। जैसे-जैसे आगे बढ़ता गया, जीवन के रहस्य खुलते गये। उसका एक-एक शब्द अनमोल है। काश आज के मुसलमान इसको अपने जीवन में उतार लें'' (राकेश, पत्रकार, शहरोजा दावत २२ जनवरी २००८)

पवित्र क़ुरआन के सम्बंध से यह दो हिन्दू भाईयों के कथन हैं, एक हिन्दू औरत का कथन है और दूसरा हिन्दू पुरुष का। इन दोनों कथनों से पूर्व भी और उनके बाद भी मधुर सन्देश संगम की ओर से शहरोज़ा दावत, देहली में बहुत से कथन प्रकाशित होते रहे जिनकी तफ़सील का मौक़ा नहीं।

ये कथन हमारी इस ग़लतफ़हमी को दूर करने के लिये काफ़ी हैं कि पूरी हिन्दू जाति क़ुरआन की विरोधी है। यह बात किसी तरह सही नहीं है, निःसन्देह उनका एक वर्ग विरोधी है। विरोधी ही नहीं, बल्कि विरोध में बिल्कुल अन्धा है। लेकिन उनकी एक बड़ी संख्या ऐसी भी है जिसका मामला इसके बिलकुल विपरीत है, जो क़ुरआन का विरोधी नहीं, बल्कि क़ुरआन के लिये प्यासी है। वह अपनी अध्यात्मिक प्यास बुझाने के लिये ईश्वरी ग्रंथ को ढूंढती है

और उसके लिये दर-दर की ठोकरें खाती है। कुछ भाग्यशाली होते हैं जिनकी मुराद पूरी हो जाती है, मगर कितने ही ऐसे होते हैं जो इस जुस्तजू में सफल नहीं होते, और यह तड़प दिल में लिये हुये इस दुनिया से रुख़सत हो जाते हैं या थक कर, मायूस होकर बैठ जाते हैं। आज इस मुल्क की हिन्दू जाति अपने ज़बाने हाल से अपने पालनहार से यह फ़रियाद कर रही है,

थक-थक के हर मुक़ाम पे दो चार रह गये
तेरा पता न पायें तो नाचार क्या करें।

शान्ति वर्मा के इस कथन से सरसरी तौर से न गुज़र जाइये (मैं बहुत दिनों से क़ुरआन का हिन्दी अनुवाद और हज़रत मुहम्मद साहब की जीवनी पढ़ना चाहती थी। मगर तलाश के बावजूद नहीं मिल पा रही थी)

इस देश के अन्दर हम मुसलमानों का फर्ज़ था कि एक-एक व्यक्ति को क़ुरआन के अनुवाद उपलब्ध कराते। उसे उसकी बड़ाई और अहमियत से अवगत कराते। इस ग्रंथ को पढ़ने और उससे फ़ायदा उठाने की लालसा पैदा करते और इस मामले में उसकी मदद करते। मगर अफसोस हमने ऐसा नहीं किया, ऐसा न करके हमने खुद भी नुकसान उठाया और इस क़ौम को भी इस महान ईश्वरी उपहार से वंचित रखा।



शायद हमारी उन्हीं कोताहियों का नतीजा है कि आज हिन्दुस्तान में एक ऐसा समुदाय पाया जाता है जो क़ुरआन को संदेह की नज़रों से देखता है और इस पर पाबन्दी लगाये जाने की बातें करता है।

ज़ाहिर है, जब उन्होंने सीधे तौर पर क़ुरआन को पढ़ा और समझा नहीं, और हमने बहैसीयत क़ौम, जीवन एवं चरित का कोई अच्छा नमूना प्रस्तुत नहीं किया, तो क्या ग़लत किया उन्होंने अगर हमारी सारी ग़ल्तियों को क़ुरआन से जोड़ दिया और यह नतीजा निकाला कि यह मुसलमान जो कुछ करते हैं, यह उनके क़ुरआन का ही सिखाया हुआ सबक़ है।

अब यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम उनकी इस ग़लतफ़हमी को दूर करें, हम उन्हें बतायें कि अगर हमें देखकर तुमने क़ुरआन पाक को समझने की कोशिश की है तो यह तुम्हारी ग़लती है। बदकिस्मती से हमारी ज़िन्दगियां क़ुरआन के अनुरूप नहीं हैं, बल्कि उससे बहुत दूर हैं।

अगर तुम्हें क़ुरआन पाक के बारे में जानना है, तो खुद क़ुरआन को पढ़ो और अगर किसी जीवनी के रूप में उसे देखना है तो हज़रत मुहम्मद के जीवन-चरित को पढ़ो, आपके खास साथियों हज़रत अबू बक्र रज़ि० और हज़रत उमर रज़ि० की सीरत को पढ़ो, और बहुत से बुज़ुर्ग

साथियों की जीवनियों को देखो।

उन ज़िन्दगियों में तुम्हें क़ुरआन पाक की तस्वीर मिलेगी। इन ज़िन्दगियों को देखकर तुम समझ सकते हो, कि क़ुरआन पाक क्या है ? वह इन्सानों से क्या चाहता है ? वह ज़िन्दगियों में इन्किलाब लाना चाहता है? वह इन्सानी ज़िन्दगियों को बुलन्दियों तक ले जाना चाहता है।

इन ज़िन्दगियों को देखकर तुम्हें अन्दाज़ा होगा कि यह किताबे इलाही इन्सानों के लिये कितनी बड़ी नेमत और कितनी बड़ी रहमत है और अगर सारे इन्सान, या इन्सानों की बड़ी तादाद इसको अच्छी तरह समझ कर अपना ले तो यह दुनिया जो दिन ब दिन जहन्नम बनती जा रही है, देखते-देखते नेमतों और राहतों से भरी हुई जन्नत में बदल जाये, किसी एक जाति या एक नस्ल या एक वर्ग के लिये नहीं, बल्कि सारे इन्सानों और सारे जानदारों के लिये। सारे इन्सानों और सारे जानदारों के लिये यह एक शानदार जन्नत बन जाये।

मुसलमानों ! आज अगर हिन्दुस्तान में क़ुरआन के विरूद्ध आवाज़े उठती हैं, या अगर कालान्तर में उठी हैं तो उसकी वजह इसके अलावा और कुछ नहीं कि हमने सही ठंग से क़ुरआन पाक का परिचय नहीं कराया। हमने बहुत सी क़ुरआनी आयतों की व्याख्या और तफ़सीर में कुछ ऐसी



बातें कहीं जो ग़ौर व फ़िक्र की कमी का नतीजा थीं। उनके दूर गामी परिणाम पर ग़ौर नहीं किया। आज वही बातें इस्लाम विरोधियों के हाथों में क़ुरआन और इस्लाम के विरूद्ध सबसे बड़ा हथियार बन गयीं।

जिहाद क़ुरआन की बहुत ही अहम और पवित्र इस्तेलाह (Term) है। इस इस्तेलाह का हमने मौक़ा ब मौक़ा इस्तेमाल किया। जिससे क़ुरआन की कोई अच्छी तस्वीर सामने नहीं आयी। हालांकि जिहाद का क़ुरआन में जो तसव्वुर है वह बहुत ही बुलन्द और बहुत दिल को छूने वाला है जो दोस्त तो दोस्त दुश्मनों को भी उसका आशिक बना दे।

आज कल इस्लामी जिहाद की जो तस्वीर ग़ैर मुस्लिमों के ज़ेहन में है, वह आतंकवाद से मिलती जुलती है, जबकि जिहाद और आतंकवाद में वही अन्तर है, जो ख़ुश्बू और बदबू में हैं या मीठे पानी और तेज़ाब में है, या रोशनी और अंधेरा में है।

जिहाद दुनिया के लिये रहमत है, जबकि आतंकवाद एक अज़ाब है। जिहाद दुनिया से ज़ुल्म और अन्याय, दहशत और बरबर्ता को ख़त्म करने की एक मुबारक कोशिश है, आतंकवाद अत्याचार और बर्बरता का नाम है। जिहाद हर व्यक्ति की स्वाभाविक स्वतन्त्रता को बाक़ी रखने

और उसे इज़्ज़त का लिबास पहनाने के लिये अपनी जान पर खेल जाने का नाम है। जबकि आतंकवाद कमज़ारों को हर प्रकार के अधिकारों से महरूम कर देने, उनकी नसों का खून चूस लेने और उनकी टूटी हुई हड्डियों पर अपनी हुकूमत का तख्त बिछाने का नाम है।

जिहाद सम्पूर्ण मानव जाति की दुनिया व आख़िरत बनाने के लिये अपने आपको मिटा देने और क़ुर्बान कर देने का नाम है। जबकि आतंकवाद रिज़्क व दौलत पर अन्यायपूर्ण कब्ज़ा करने के लिये और इन्सानी आबादियों को उजाड़ देने का नाम है। जिहाद इस धरती पर सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह के लिये जीने का नाम है, जबकि आतंकवाद शैतानी इच्छाओं और शैतानी प्रोग्रामों के लिये जीने का नाम है।

हमारे प्यारे नबी सल्ल० मुजाहिदों के सरदार थे, मगर रहमत और दया का माडल थे। प्यार व मुहब्बत का महासागर थे। अपने पराये सबके ग़म ख्वार थे और भटके हुये इन्सानों को सीधे रास्ते पर लाने की फ़िक्र में घुले जाते थे।

ज़रूरी है क़ुरआनी टर्मिनालाजी के सिलसिले में ग़ैर मुस्लिमों की जो ग़लत फ़हमियां हैं उसे दूर की जायें और क़ुरआनी शिक्षाओं का रोशन पहलू उनके सामने लाया जाये।



यह बात हमारे ज़ेहन में स्पष्ट रहे कि अगर कहीं क़ुरआन से नफ़रत या बग़ावत पायी जाती है तो हक़ीक़त में क़ुरआन से नफ़रत और बग़ावत नहीं बल्कि मुसलमानों की नयी या पुरानी नस्लों के तरीक़ेकार से नफ़रत और बग़ावत है, इस नफ़रत का इलाज उनसे नफ़रत नहीं है, इस का इलाज यह है कि हम अपनी कोताहियों को समझे। सच्चे दिल से उनको कुबूल करें और जिस हद तक सम्भव हो, उनकी छतिपूर्ति की कोशिश करें।

अगर कोई इस्लाम का मुखालिफ अन्जाने में क़ुरआन के साथ कोई बेअदबी या गुस्ताखी करता है, तो उस पर उत्तेजित होने की ज़रूरत नहीं, बल्कि बहुत ही नर्मी और दर्दमन्दी के साथ उसे समझने की आवश्यकता है।

इस तरह के अवसरों पर अगर कोई जवाबी लेख प्रकाशित की जाये, कोई सम्पादकीय या कोई कालम लिखा जाये, तो इसमें व्यंग एवं कटाक्ष, क्रोध एवं गुस्सा या मुनाज़रे का नहीं, नसीहत, ख़ैरख़्वाही और मुहब्बत का अन्दाज़ हो, बिलकुल वही अंदाज जो किसी ईमानदार और दर्दमन्द डाक्टर का अपने नादान मरीज़ के साथ हो सकता है।

और अगर सम्भव हो तो मीडिया में इसे बहस का विषय बनाने के बजाये सम्बन्धित व्यक्ति या सम्बन्धित पार्टी से सीधे सम्पर्क करके उसकी ग़लतफ़हमी दूर करने और

हिकमत से उन्हें संतुष्ट करने की कोशिश की जाये।

इस तरह के अवसरों पर जज़्बात से काम लेना और हिंसा का तरीक़ा अपनाना, कभी लाभकारी नहीं होता, बल्कि उससे किताबे इलाही की और अधिक अपमान होता है और दुश्मनों की ज़िद और शिद्दत में वृद्धि हो जाती है।

क़ुरआन के नुजूल के ज़माने में भी क़ुरआन पाक का मज़ाक उड़ाया गया, खूब-खूब उड़ाया गया। नबी सल्ल० का भी मज़ाक उड़ाया गया, जिसकी तफ़सीलात खुद क़ुरआन पाक में मौजूद है। लेकिन इस पर कभी मुसलमानों को या हुज़ूर सल्ल० को गुस्सा नहीं आया।

क़ुरआन की तबलीग़ और दावते इस्लाम के सिलसिले में क़ुरआन पाक की बहुत ही अहम हिदायत है, ''बुराई और बदतमीजी का इलाज हमेशा अच्छे एखलाक़ से करो। यकायक देखोगे कि जो तुम्हारा दुश्मन था, वह तुम्हारा करीबी दोस्त हो गया।

ज़रूरत है कि हम क़ुरआन पाक के सिलसिले में सब्र और अक़्ल व ज़ेह्न से काम लें और दुनिया के सामने इस तरह परिचित करायें कि वह दुनिया वालों की सबसे महबूब किताब बन जाये।

फिर अगर हम इस किताब को दुनिया वालों की सबसे प्रिय पुस्तक बनाने के ख्वाहिशमन्द है, तो इससे पहले ज़रूरी है कि यह खुद हमारी सबसे प्रिय पुस्तक बन जाये।



केवल ज़बानी दावत जिसमें से साथ ज़िन्दगी की ताईद और चरित्र से पुष्टि न हो, वह एक बेमायने आवाज़ होती है। वह दावत जो खुद दावत देने वाले को प्रभावित न कर सकी, वह किसी दूसरे को क्या प्रभावित करेगी?

अपनी दावत का सबसे पहला मुख़ातब अपनी ज़ात और अपने परिवार को बनाइये, दूसरे नम्बर पर दूसरों को बनाइये-

आदमी नहीं सुनता आदमी की बातों को
पैकरे अमल बन कर ग़ैब की सदा हो जा

इस्लामी भाईयो ! जब हम किसी दूसरे को क़ुरआन की दावत या क़ुरआन भेंट करते हैं तो मानो कि हम यह कहते हैं कि हमने खुद इस किताब को अच्छी तरह पढ़ा और समझा है। इसके बताये हुये उसूलों और सिद्धान्तों का तज्रबा किया है।

तज्रबे के बुनियाद पर हम यह यक़ीन रखते हैं कि यह किताबे हमारे दिल और रूह के लिये आबेहयात (रामबाण) है। हमारी सारी सामाजिक एक पारिवारिक बीमारियों के लिये बेहतरीन नुस्खा है। अब यह क्यों कर सम्भव है कि एक कीमती नुस्खा हमारे पास मौजूद हो और उससे हम अपने देश वासियों को लाभ न पहुँचायें।

फिर क़ुरआन की दावत पेश करने के लिये यह भी ज़रूरी है कि जिनके सामने हम क़ुरआन की दावत पेश कर

रहे हों, उनके और हमारे बीच पूरा एतेमाद और बेगरज़ मुहब्बत का माहौल पाया जाये।

यह विश्वास और प्रेम का वातावरण उसी समय पैदा हो सकता है, जब हम दर्दमन्दी, दिली तड़प और अच्छे किरदार के उस स्थान पर हों कि क़ौम से बेझिझक कह सकें कि मैं तुम्हारा सच्चा शुभचिन्तक हूँ और खैरख्वाह हूँ और जब यह बात आप क़ौम से कहें तो चाहे ज़बानें खामोश हों, मगर उनके दिल यह गवाही दे रहे हों कि आप वास्तव में उनके शुभचिन्तक हैं।

इस्लामी भाईयों ! आप इस बात को कभी न भूलिये कि इस देश में आपकी मूल हैसीयत एक दावत देने वाले और एक क़ुरआन के शिक्षक की है। आप को इस देश में दावतेदीन और क़ुरआन की तालीम के लिये जीना है। आपको इस मुल्क में वह काम करना है, जो काम हमारे और आपके नबी सल्ल० ने अरब की धरती में किया था। और यह काम उसी वक्त अन्जाम पा सकता है, जब इस काम के लिये हमारे अन्दर तड़प हो। वही तड़प हो जो हमारे हादी और रहनुमा हज़रत मुहम्मद सल्ल० के अन्दर पायी जाती थी।

ताइफ़ में मुकद्दस खूं टपका मक्के में कभी पत्थर खाये
बस एक तड़प थी, कैसी तड़प इन्सान हिदायत पा जाये

ज़रूरी है कि हमें अपने देशवासियों से मुहब्बत और हमदर्दी हो, उनके लिये हमारे अन्दर दर्दमन्दी व दिली तड़प हो।



उन्हें सीधे मार्ग पर लाने के लिये चिन्ता हो। हमारे और उनके बीच कभी टकराव न हो।

वह अगर हमारे साथ कोई ज़्यादती भी करें तो उनके ख़िलाफ़ हमारे अन्दर कोई बदले की भावना न हो। दावते दीन का काम हमेशा बैलौसी और बेनफ़्सी चाहता है। सै० क़ुतुब शहीद रह. ने किसी मौक़े पर कहा था–

(हम इस्लाम की ओर सिर्फ इसलिए बुलाते हैं कि हमें लोगों से मुहब्बत है, हम उनके लिये कल्याण और भलाई के ख्वाहिशमन्द हैं और हम यह काम करते रहेंगे। अगर्चे वह सतायें और हर तरह की तकलीफ़ें पहुँचायें कि एक इस्लाम की दावत देने वाले का यही स्वभाव हुआ करता है। उसके जज़्बों और संवेदनाओं की यही कैफ़ीयत हुआ करती है। वह अपने दुश्मनों का भी हमदर्द और मुख़्लिस हुआ करता है। वह इनकी हिदायत के लिये बेकैफ़ और उनकी गुमरही से दिल फट जाता है)

सै० क़ुतुब शहीद रह० के ही एक पेशवा यूसुफ़ तलअत यह भी इख़वानुल मुस्लिमून के रहनुमाओं में से थे। कई वर्षों तक मिस्र की जेल में रहे और भयानक ज़ुल्म व ज़्यादती का निशाना बने रहे। आख़िरकार वहां की निर्दयी और इस्लाम-विरोधी फौजी अदालत ने उनको फांसी की सज़ा सुना दी, फांसी के लिये जब उनको ले जाया जाने लगा तो ईमान व यक़ीन और सोज़ व मुहब्बत की उन बुलन्द

फ़ज़ाओं में वह उड़ान भर रहे थे कि सारी इन्सानी बुलन्दियां उनके क़दमों में आ गयीं थी, उस वक़्त वह अपने रब से कह रहे थे और ज़बान पर यह अलफाज़ थे–

''अल्लाहुम्मगफ़िरली वलिमन अज़बूनी''

''खुदाया ! तू मुझे भी माफ कर दे और उन्हें भी माफ़ कर दे जिन्होंने मुझे जुल्म की चक्की में पीसा''।

अल्लाह अल्लाह ! कितना बड़ा दिल और कितना बड़ा हौसला था कि उसमें आकाश भी समा जाये। मगर यह कोई आश्चर्य की बात नहीं, एक सच्चे दाई हक का यही दिल और यही जिगर हुआ करता है।

मुहतरम दोस्तो ! दीन की दावत और तालीमे क़ुरआन का काम इसी तरह की बेनफ़्सी और बेलौसी चाहता है। देशवासियों के दिलों को सदव्यवहार और प्रेम से जीतने की कोशिश कीजिये। प्रेम और सदव्यवहार का तीर कभी निशाने से दूर नहीं जाता, यह वह तीर है, जो इन्सान तो इन्सान चट्टानों के दिलों में सूराख कर देता है। दुनिया में इस्लाम तलवारों की नोक से नहीं फैला, हमारे बुज़ुर्गों के अच्छे किरदार और उनकी दिल सोज़ियों से फैला। आज भी अगर हम क़ुरआन पाक के पैग़ाम को आम करना चाहते हैं, तो उसके लिये यही दर्दे–मुहब्बत, यही हौसला और यही महान किरदार की ज़रूरत है।